International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कृष्ण भक्ति काव्य: उद्‌गम स्रोत और विकास

डॉ.एम. शाबान खान

पी.जी.टी.हिंदी, हार्वेस्ट इंटरनेशनल स्कूल, अत्तिबेले, बेंगलुरु, कर्णाटक

Abstract

हिंदी साहित्य में मध्यकाल के अंतर्गत कृष्णभक्ति काव्य अत्यंत प्रौढ़, लोकरंजक और संवृद्ध परम्परा रही है, परन्तु इस परम्परा का अविभार्व जिस स्थिति और काल में हुई उसका भी महत्त्व है कृष्ण भक्ति का उद्‌भव और उसके पुष्पन से सम्बंधित कुछ नवीन तथ्यों को उजागर किया गया है।

मूल शब्द- भक्ति, कृष्णभक्ति, भक्ति का उद्‌भव, आलवार, भारतीय भाषाएँ एवं कृष्णभक्ति, अवतारवाद,

हिंदी साहित्य के मध्यकाल में कृष्ण भक्ति का जो विकसित एवं प्रौढ़ रूप हमें दिखाई पड़ता है, उसका आरंभिक रूप कृष्ण को आराध्य रूप में प्रतिष्ठित करने से होता है। कृष्ण जो मध्यकाल और वर्तमान समय में पूजनीय और विष्णु के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित है, उनका प्रथम नाम ऋग्वेद में आता है। ऋग्वेद के अष्टम तथा दशम मंडल के रचयिता कृष्ण ऋषि हैं। इसके साथ ही 'कौशतिकी ब्राह्मण' में आंगिरस ऋषि के शिष्य बताया गया है। इसी तरह 'छांदोग्योपनिषद' में भी आंगिरस के शिष्य देवकी पुत्र कृष्ण को बताया गया है जबकि महाभारत में वर्णित कृष्ण को वेद व्याख्याकार, योद्‌धा, प्रशासक, नीति-निपुण के तौर पर चित्रित किया गया है। अब सवाल यही उठता है कि महाभारत और उत्तर वैदिक साहित्य में वर्णित कृष्ण एक ही हैं अथवा वो अलग-अलग व्यक्ति। पण्डित डॉ. भंडारकर ने माना है कि ये दोनों ही अलग व्यक्ति हैं। सही मायनों में देखा जाए तो महाभारत के कृष्ण वैदिक और उत्तर वैदिक साहित्य से अलग हैं। "उत्तर वैदिक साहित्य में ही कंसारि कृष्ण का उल्लेख मिलता है। 'छान्दोग्य उपनिषद' में घोर अंगिरस के शिष्य कृष्ण का जिन्हें देवकी का पुत्र कहा गया है (छान्दोग्य -उपनिष्द 3/14/61) वह संयोग की बात प्रतीत होती है। महाभारत और पुराणों के देवकीनन्दन कंसारि कृष्ण से उनका कोई सम्बंध प्रतीत नहीं होता।"[1] सही मायनों में कृष्ण का ऐतिहासिक रूप महाभारत से ही ज्ञात होता है, जहाँ कृष्ण योद्‌धा, निर्देशक, उपदेशक, धर्मरक्षक, लोकरक्षक वेदों के ज्ञाता के रूप में चित्रित हुए हैं। परन्तु अवतार या आराध्य के रूप में नहीं "महाभारत के प्राचीन अंशों में कृष्ण के देवत्व या अवतारवाद की कोई कल्पना प्रतीत नहीं होती। बाद के अंश में कृष्ण को परमेश्वर नारायण और अवतार माना गया।"[2] महाभारत के बाद धीरे-धीरे कृष्ण को अवतार या नारायण रूप में स्थापित किया जाने लगा। परवर्ती काल में कृष्ण के श्रृंगारी रूप का विकास हुआ। भागवत पुराण में कृष्ण के जन्म से लेकर द्वारिकावास तक का संपूर्ण चित्रण हुआ-"गोपाल कृष्ण, ब्रज बिहारी शीलक कृष्ण, बालकृष्ण आदि कृष्ण के सब रूपों ऐश्वर्य राजस और माधुर्य श्रृंगारी आदि सभी का विस्तृत चित्रण हुआ।"[3] कृष्ण का विस्तृत रूप और लोक देवता रूप

हमें दिखा वह महाभारत के उत्तरकाल से ही दिखना आरंभ हो गया था।यह तो निश्चित हैं कि कृष्ण की साधना ईसा से काफी पहले आरम्भ हो गई। "परवर्ती समय में कृष्ण को नारायण का अवतार मानकर उनकी पूजा का आरंभ ईसा पूर्व होने लगी। नारायण अथवा विष्णु कृष्ण के नाम से पर्यायवाची हो गए और कृष्ण को विष्णु का अवतार मान लिया गया, महाभारत के उत्तर अंशों में विष्णु के दशावतारों वराह, वामन, नृसिंह, कृष्ण, राम, परशुराम, हंस, कूर्म, मत्स्य और कल्कि का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।"[4]

कृष्ण या कान्ह आरंभ में लौकिक नाम प्रसिद्ध थे। ईसा के आरंभिक शताब्दी में अभीर जाति को कृष्ण के अनेक रूपों में महत्त्व देने की बात कही जाती है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में कृष्ण को लेकर बाल लीलाओं क्रीड़ा-कौतुक तथा मनोरंजक कथाओं का आरंभ हुआ। "न केवल शूरसेन प्रदेश में अपितु पश्चिम दक्षिण,पूर्व आदि सभी प्रदेशों में कृष्ण की बाल किशोर लीलाएँ, उनके क्रीड़ा कौतुक की मनोरंजक कथाएँ लोक प्रचलित हो गई थीं।"[5] यह एक बात का उल्लेख करना भी आवश्यक है कि कृष्ण एक लोकनायक भी हैं जो लोक में आरंभ से अत्यंत प्रिय और आदर्श रहें हैं, अपने इसी लोकनायकत्तव के आधार पर प्रतिष्ठित हुए। भागवत धर्म की स्थापना होने पर कृष्ण को आराध्य माना जाने लगा। विभिन्न धर्म ग्रन्थों के प्रभाव से पुराण काल में यह विश्वास प्रमुख हो गया कि भगवान अपनी लीला का विस्तार करने और लोकमंगल तथा लोकरक्षा के लिए ही इस संसार में आते हैं। इसी से कृष्ण के अनुरंजनकारी बाल और रसिक रूप का महत्त्व बढ़ा। जिसके परिणाम स्वरूप ही भक्ति के विभिन्न स्वरूप हमारे सामने आए। ईश्वर उपासना, व्रत, कर्म, मोक्ष, साधना इत्यादि कष्टकारी होते हैं जबकि स्मरण, कीर्तिन, भजन अधिक सहज और प्रत्यक्ष हैं। इस कारण ही भक्ति का विकास हुआ-"इस कारण वैष्णवों ने ज्ञान, कर्म और उपासना मार्ग की दुरूह एवं कष्ट साध्य साधना का त्याग्य कर श्रवण, कीर्तन, दैन्य, आत्मनिवेदन आदि के सुगम माध्यम से भगवान के समीप पहुँचने का पथ खोज निकाला।"[6]

भक्ति का उद्भव दक्षिण में माना जाता है लेकिन उससे पहले संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश में कृष्ण को लेकर लेखन हो चुका था। कृष्ण की लीलाओं को लेकर लिखा गया पहला ग्रंथ संस्कृत साहित्य में 'ब्रहमचरित' है। अश्वघोष का यह पहला काव्य है, जिसमें कृष्ण के बाल रूप और लीलाओं का चित्रण किया गया है। इसके अलावा कवि हाल द्वारा रचित 'गाहासतई' अथवा 'गाथा सप्तशती' भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में राधा, गोपी, यशोदा आदि के विषय में चित्रण किया गया है। इस ग्रंथ में कृष्ण और उनकी लीलाओं का जो चित्रण हुआ है, वह मध्यकाल के कृष्ण भक्तिपरक काव्य से ही मिलता जुलता है-"इन लीलाओं को पढ़ने से कृष्ण का लगभग वैसा ही चित्र उभरता है, जैसा मध्ययुगीन हिंदी काव्य के नटखट श्रीकृष्ण का है।"[7] इसी परंपरा में भट्ट नारायण ने अपने 'वेणीसंहार', नाटक में कृष्ण को ही केंद्र में रखा। इन ग्रंथों से यह प्रमाणित होता है कि कृष्ण को लेकर आठवीं शताब्दी में ही कृष्ण की लीला, राधाकृष्ण और गोपियों की रासलीला का वर्णन हो चुका था। संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य अभिनव गुप्त के ग्रंथ 'ध्वन्यालोक' के एक श्लोक में कृष्ण का उल्लेख मिलता है।

कृष्ण भक्ति के आरंभ से जातक कथाओं, जैन ग्रंथों, गाथासप्तशती आदि संस्कृत-प्राकृत के प्राचीन ग्रंथों में श्रीकृष्ण के लौकिक तथा अलौकिक रूप और लीलाओं का चित्रण मिलता है। संस्कृत साहित्य में ईसा पूर्व रचित भास के नाटकों शिशुपालवध (बाल चरितम्) आदि में कृष्ण की लीलाओं, आलौकिक रूप का चित्रण मिलता है-"संस्कृत साहित्य में ईसा पूर्व रचित भास के नाटकों (बालचरितम् में बाल-कृष्ण की लीलाओं का चित्रण भास ने किया), 'शिशुपालवध' आदि परवर्ती संस्कृत काव्यों में भी कृष्ण के जीवन और कार्यों का वर्णन पाया जाता है।"[8] इसके साथ ही प्राकृत भाषा में भी कृष्ण संबंधित काव्य मिलते हैं। हेमचंद ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'प्राकृत-व्याकरण' में दो पद्य उद्धत किये, जिसमें कृष्ण का वर्णन मिलता है। साथ ही 'नाट्यदर्पण' 'अलंकार-कौस्तुभ', कंदर्पमंजरी', 'कृष्णकर्णामृत', 'श्रीकृष्ण लीलाभृत' आदि कृष्ण से सम्बंधित है। कृष्ण से सम्बंधित काव्य हमें बारहवीं शताब्दी के बाद और अधिक मिलते हैं। बोपदेप कृत 'हरिलीला', वेदांतदेशिक कृत यादवाभ्युदय, इत्यादि कृष्ण विषयक ही काव्य है। इस आधार पर यह ज्ञात होता है कि भक्ति की जो परंपरा दक्षिण भारत से आई और उसे चार आचार्यों ने फैलाया, उससे पहले ही कृष्ण को लेकर लिखा जा रहा था। अब सवाल यह उठता है कि क्या आलवार भक्तों और दक्षिण के आचार्यों विशेषकर रामानुजाचार्य से पूर्व कृष्ण भक्ति पहले से मौजूद थी अथवा नहीं। यह शोध का विषय है। परन्तु मैं इतना अवश्य स्पष्ट करना चाहता हूँ कि दक्षिण के वैष्णव भक्तों से पहले भी भारत में कृष्ण को लेकर लिखने की एक लंबी परंपरा मौजूद थी। यही नहीं उपरोक्त जिन रचना और रचनाकारों का नाम दिया है, उनमें बहुत से रचनाकार उत्तर भारत से संबंधित थे। 'ध्वन्यालोक' के रचनाकार ने दो श्लोक कृष्ण से संबंधित उद्धत किये। अभिनव गुप्त मूलतः काव्यशास्त्रीय थे और काव्यशास्त्र पर ही उन्होंने अपने इस ग्रंथ में विचार किया। उदाहरण स्वरूप ही उन्होंने कृष्ण से सम्बंधित श्लोक दिये। इससे यह सिद्ध होता है कि उत्तर भारत में 10 वीं शताब्दी से पूर्व एक विकसित परंपरा थी, जिसमें कृष्ण को आधार बनाकर लिखा जा रहा था।

कृष्ण भक्ति के विकास में आलवार भक्तों तथा दक्षिण के आचार्यों का भी योगदान रहा है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। बारह आलवार भक्तों में एक महिला भी थीं, जिनका नाम आण्डाल अथवा आन्दाल बताया जाता है। इनकी कथा और मीरा की कथा कुछ मिलती-जुलती है- "ऐसा माना जाता है कि इन आलवार भक्तों में आन्दाल नाम की एक भक्तिन हुई जो मीरा के समान कृष्ण को अपने पति के रूप में स्वीकार कर चुकी थी तथा अन्ततः वह भी कृष्ण में ही विलीन हो गयी थी।"[9] दक्षिण के चार आचार्यों में पहला नाम रामानुजाचार्य का आता है। इनका समय ग्यारवीं शताब्दी का ज्ञात होता है। रामानुज का सैद्धांतिक मत विशिष्टाद्वैतवाद कहलाता है। इन्होंने सगुण वैष्णव भक्ति का प्रचार किया। आगे चलकर इनके शिष्यों में रामानंद आते है, जिन्होंने विष्णु के रूप राम की प्रतिष्ठा की। इतना अवश्य है कि ये दक्षिण के प्रथम आचार्य है जिन्होंने भक्ति का विकास किया। इसके साथ ही बारहवीं शताब्दी में दक्षिण भारत के दूसरे महत्त्वपूर्ण आचार्य निम्बार्क हुए। ये दक्षिण से आकर वृंदावन में रहने लगे थे। इनसे ही प्रभावित होकर स्वामी हरिदास ने सोलहवीं सदी में हरिदासी या सखी संप्रदाय की स्थापना की। निम्बार्काचार्य

की शिष्य परंपरा में श्रेष्ठ रचना 'गीत गोविंद' के रचनाकार का नाम आता है। भक्ति के निमित्त विष्णु के स्थान पर कृष्ण के सगुण रूप का प्रतिपादन किया। वैष्णव भक्ति के आचार्य स्वामी मध्याचार्य ने अपना मत द्वैताद्वैत लेकर ब्रह्मसंप्रदाय की स्थापना की। "इन्होंने भी वैष्णव भक्ति को विशेष प्रश्रय किया। उत्तर भारत में राधा-बल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक गोसांई हितहरिवंश पर इनका भी प्रभाव पड़ा।"[10] इन्हीं वैष्णवों आचार्यों की परंपरा में चौथा नाम विष्णुस्वामी का आता है। जिन्होंने अद्वैतवाद के विरोध में शुद्धाद्वैत मत की स्थापना की। ऐसा माना जाता है कि संत ज्ञानेश्वर के ये गुरू थे। इस प्रकार इन चार आचार्यों के प्रभाव से अनेक सम्प्रदाय विकसित हुए उनमें बल्लभ-संप्रदाय, राधाबल्लभ संप्रदाय, सखी अथवा हरिदासी संप्रदाय, गौड़ीय संप्रदाय, इत्यादि हैं। बल्लभ संप्रदाय के अन्तर्गत सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास, नंददास, चतुर्भुजदास, गोविंद स्वामी तथा छीतस्वामी हुए। यही कृष्ण भक्त कवि पुष्टिमार्गीय कवि कहलाए। राधावल्लभ संप्रदाय के अन्तर्गत हितहरिवंश, हरिराम व्यास, ध्रुवदास, चर्तुभुज सेवक जी आदि कृष्ण भक्त हुए। सखी या हरिदासी सम्प्रदाय के कृष्ण भक्त कवियों में स्वामी हरिदास, श्री भट्ट तथा श्री हरिव्यास देव आदि का नाम आता है। इसके साथ ही गौड़ीय संप्रदाय के अन्तर्गत गदाधर भट्ट तथा सूरदास मदनमोहन का नाम लिया जाता है। इस तरह इन सम्प्रदायों तथा संप्रदाय मुक्त कवियों ने मध्यकाल में कृष्ण भक्ति को विकसित किया। मध्यकाल में संप्रदाय मुक्त कवियों में मीरा रसखान तथा तुलसीदास का नाम आता है। यद्यपि तुलसीदास रामभक्त कवि है परन्तु कृष्ण को लेकर उन्होंने भक्तपरक काव्य की रचना की। इसके साथ ही अब्दुर्रहमान (रहीम) गंग कवि, नरहरि तथा व्रहम कवि भी अपना योगदान दे रहे थे। यद्यपि यह कवि राजाश्रित थे परन्तु फिर भी कृष्ण के प्रति अपना भक्ति भाव प्रकट कर रहे थे। इस तरह यह हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की परंपरा रीतिकाल से लेकर आधुनिक काल तक पहुँची।

ब्रजभाषा में जितना कृष्ण को लेकर लिखा गया वह अन्यत्र दुर्लभ है। परन्तु इतना अवश्य है कि अष्टछाप के कवियों से पूर्व भी हिदी की अन्य भाषाओं (बोलियों) में कृष्ण को लेकर लिखा गया-"इसमें सन्देह नहीं कि ब्रज भाषा में कृष्ण काव्य की सर्वाधिक रचना हुई, किंतु हम देखते है कि मैथिली, अवधी आदि अन्य भाषाओं में भी कृष्ण काव्य की समृद्ध परम्परा प्राप्त होती है।"[11] जयदेव की परंपरा में विद्यापति ने कृष्ण को श्रृंगारिक रूप में ही चित्रित किया। इसके साथ ही असमिया में 'शंकरदेव' ने पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में कुछ कृष्ण भक्ति परक पदों की रचना की- "गोपिन प्रान काहेनो गयो रे गोविन्द।

हासु पापिनी पुनु भयो रे सुपरभात आजु भेटन मुख चंदा।

उगत सूर दूर गयो रे गोविन्द भयो गोप बधु आन्धा।"[12]

इनका निवास अवश्य असम था। परन्तु कविता की भाषा ब्रज ही है।

इसके साथ ही गुजरात के 'भाषण कवि' ने कृष्ण की लीलाओं को लेकर कुछ पदों की रचना की। इनकी मातृभाषा तो गुजराती थी, परन्तु उस पर प्रभाव ब्रज का ही था। महाराष्ट्र के भक्त कवि 'नामदेव' के पद कृष्ण भक्ति से सम्बंधित मिलते हैं। 14 शताब्दी में फ़ारसी लिपि परन्तु हिन्दवी या हिन्दुस्तानी में अमीर

खुसरों ने कृष्ण जी को समर्पित कर 'छाप तिलक' तथा 'हालत-ए-कन्हैया' नाम से दो रचनाएँ लिखी। अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना, अमीर खुसरो, सय्यद इब्राहीम जिनकी मादरी ज़बान फारसी या रेख्ता थी परन्तु श्रीकृष्ण पर ब्रजभाषा में ही लिखा। हिंदी से अलग उर्दू, फारसी, सिन्धी, पंजाबी और दूसरी भारतीय और विदेशी भाषाओँ में भी कृष्ण को समर्पित रचने मिलती हैं। नज़ीर अकबराबादी की लगभग दो दर्जन से अधिक रचनाएँ कृष्ण के प्रति भक्तिभावना प्रकट करती हैं। बलदेव जी का मेला, कृष्ण जी की तारीफ, जन्म कन्हैया जी, जोगन, होली आदि महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि ईसा पूर्व जब कृष्ण आराध्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए तो परवर्ती साहित्य की रचना भी उन्हें लेकर होने लगी। संस्कृत में हजारों ग्रन्थ कृष्ण को लेकर लिखे गए। भक्तिकाल में अष्टछाप के कवि तथा अन्य दामोदरदास, नागरीदास, नेही, जगन्नाथ गोस्वामी, रसखान (सैय्यद इब्राहीम) बिट्ठल बिपुल, बिहारिनदास, रामराय इत्यादि सामने आए और यह परंपरा आधुनिक काल तक पहुँची। निश्चित रूप से इस कृष्ण भक्ति काव्य ने हिंदी को अपनी अनमोल निधि प्रदान की।

सन्दर्भ-

1. मध्यकालीन कृष्ण काव्य- कृष्ण देवी सारी, हिंदी साहित्य संसार दिल्ली-6 प्रथम संस्करण पृ01
2. वही पृ01-2
3. वही पृ02-3
4. वही पृ04
5. वही पृ05
6. ब्रज भाषा के काव्य में माधुर्य भक्ति-डा0 रूपनारायण, नव युग प्रकाशन दिल्ली 7 प्रथम संस्करण पृ011
7. हिंदी साहित्य का इतिहास -संपादक -डा0 नगेन्द्र, पृ0183
8. मध्यकालीन कृष्ण काव्य-डा0 कृष्ण झारी, हिंदी साहित्य संसार दिल्ली 6 प्रथम संस्करण 1970,पृ07
9. हिंदी साहित्य का भक्तिकाल -डा0 प्रेमीराम मिश्र, राजस्थान प्रकाशन जयपुर -2 संस्करण
1. 1920, पृ06
10. मध्यकालीन कृष्ण काव्य -डा0 कृष्ण देव झारी, हिंदी साहित्य संसार दिल्ली-6, प्रथम संस्करण 1970, पृ07
11. वही पृ012
12. वही पृ014